हिन्दी साहित्य और नारी के रूप

संपादक
डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर
डॉ. महांतेश आर अंची

प्रकाशक :

अधिकरण प्रकाशन

मकान संख्या-133, गली नम्बर-14, प्रथम तल,
बी-ब्लॉक, खजूरी खास, दिल्ली-110094
मोबाईल : 9716927587
ईमेल : adhikaranprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण	:	2021
आवरण चित्र	:	दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात'
टाईप सेटिंग	:	मनीष कुमार सिन्हा
प्रिंटिंग	:	जी.एस. ऑफसेट, दिल्ली

© **संपादक**

ISBN : 978-93-89194-64-7
मूल्य : 375 रुपये

हिन्दी साहित्य और नारी के रूप (आलोचना)-सं. डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर, डॉ. महांतेश आर अंची

Hindi Sahitya Aur Nari Ke Roop (Crticism) Edited by Dr. Anita. M. Belgaonkar, Dr. Mahantesh R Anchi

हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में स्त्री 54
: डॉ. अरुणा
बालिका शिक्षा बढ़ते समाज की बढ़ती जरूरत 61
: हिना तिवारी
निराला की कविताओं में नारी चित्रण 68
: डॉ. सीहेच. वी. महालक्ष्मी
स्त्री विमर्श 74
: पूनम कुमारी
महिला कहानी लेखन में बदलती नारी की छवि 82
: डॉ. महादेवी प. कणवी
समकालीन हिंदी उपन्यास में नारी प्रतिरोध-कृष्णा सोबती 88
के उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में
: डॉ. हेलन मेरी ए. जे.
कैसे महिला उद्यमी भारतीय समाज को बदल रही हैं 96
: नागेश एन. पी.
इक्कीसवी सदी के हिंदी कविता में नारी 99
: डॉ. सी. एन होम्बाली
स्त्री विमर्श : कल और आज : डॉ. खरटमोल मदन नामदेव 102
आधुनिक नारी और संस्कृति : आचार्य पी. के. जयलक्ष्मी 108
नारी विमर्श(हिन्दी उपन्यास के संदर्भ में) 112
: डॉ. के. शोभा रानी
स्त्री साहित्य(महिला नाट्य लेखन) 117
: डॉ. थामस बाबू
'मित्रो मरजानी' में स्त्री-मन की विविध संवेदनाओं का चित्रण 120
: डॉ. मधु रानी
महिला समाज में सशक्तीकरण की भूमिकाओं का परिदृश्य 125
: बाबुलालभूरा

हिमांशु जोशी के कथा साहित्य में स्त्री

—डॉ. अरूणा

स्त्रीयों को भारतीय समाज में उच्छ स्थान प्राप्त है। स्त्री एवं पुरूष दोनों केतें बंधे सनातन हैं। हमारे देश में गागी, मैत्रेयी, घोषा आदी ऐसी स्त्रियों हुई हैं, जिन्होंने सामज में स्त्री आदर्श प्रस्तुत किया है। इसीलिए मनुस्मृति में कहा गया है-'यह स्त्रियों पूज्यते रमन्से तत्र देवताः। पत्नी पुरूष की अर्धांगी है। उसके बिना पुरूष, धर्म, अर्थ, काम और मोह को प्राप्ति नहीं कर सकता है।समय-समय पर समाज में स्त्रियों का विभिन्न प्रकारेण महत्व रहा है। वह सब होते हुए भी आधुनिक आरत को सर्वाधिक महत्वपूर्ण चर्चित समस्या यदि कोई है, तो वह है स्त्री समस्या। विधवा-विवाह के निषेध ने करोड़ों युवतियों को आत्म-नियंत्रण और आत्मदान के लिए बाध्य कर दिया। यदि इस अग्नि-परीक्षा में वे स्त्री ने उतर सकी और प्रवृत्ति प्रेरणा से उनका पैर कहीं डगमग गया तो उनके जीवन की विषमता और भी बद्र जाती है और उनके सामने वेश्या-वृत्ति या आत्महत्या के अतिरिक्त कोई तीसरा मार्ग नहीं रह जाता। भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति आज अत्यन्त दयनीय है। समाज के स्त्री धर्म, नीति-नियम, आधार कमवल स्त्री के लिए हो बने हैं। किन्तु वही कार्य यदि कोई पुरूष करता है तो समाज उस कुछ नहीं कहता। और यदि भूल से भी वह कार्य स्त्री कर बैठे तो कुलटा, पतिता और भी न जाने कितने ही विशेषणों से समाज उसे कलंकित कर देती है।

किसी भी समाज को श्रेष्ठता और अश्रेष्ठता उस समाज में स्त्री की स्थिति पर निर्भर करती है। गांधीजी का भी कहना था कि स्त्री की अबला कहना, उसके प्रति यह पुरूष का अन्याय है। उन्होंने पर्दा प्रथा का विरोध किया या और साथ ही स्त्री

के प्रति रूढ़िवादी नैतिक दृष्टिकोण के लिए पुरूषों की कद आलोचना की थी।

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में स्त्री सर्वाधिक विवेध्य विषय रही है। हिमांशु जोशी ने स्त्री-जीवन की मूलभूत चेतना को समस्या चेतना की समक्षा एवं उसे उद्घाटित किया है।

पारिवारिक स्त्री : हिमांशु जोशी जी ने अपने परिवेश को लेकर अनेक सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। परिवार समाज का अंग होने के कारण उनकी कहानियों में परिवारिक व्यवस्था का चित्रण मिलता है। मनुष्य साथ-साथ रहे इसलिए परिवार और समाज की निर्मिति हुई। लेकिन इस निर्माण के साथ संघर्ष भी आरंभ हुआ। युगानुरूप इस संघर्ष की दिशा में बदलात आता गया, जिसका चित्रण हम आधुनिक युग में देख सकते हैं।

हिमांशु जोशी जी की कहानियों में संघर्ष के कई रूप है। जोशी जी ने अपनी कहानियों में संयुक्त परिवार, महानगरीय पारिवार और छोटे परिवार का संघर्ष चित्रित किया है।

परिवारिक व्यवस्था का चित्रण करनेवाली कहानियों में 'आँखें', 'इस बार फिर बर्फ गिरी तो', 'नई बात', 'नाव पर बैठे हुए', 'अभाव', 'रथ चक', 'नंगे पावों के निशान', 'साफ', 'लकीर सी परछाई', 'सीमा में कुछ और आगे', 'अनचाहे', 'न जानना', 'एक पारमिर्ता', 'बूंदपानी', 'सिमटा हुआ दुःख', 'किनारे के लोग', 'किसी एक शहर में', 'जलते हुए डैने' तथा 'तपस्या'।

'आँखें' तथा 'इस बार फिर बर्फ गिरी तो इन दोनों कहानियों में संयुक्त परिवार के दायित्वों को दोते हुए संघर्ष और शोषण के विविध संदर्भो का चित्रण मिलता है। अपने ही परिवार के जनों का असहयोग, स्वार्थ और उपेक्षा बूढ़ें और विधवा माँ के बच्चों की यातनाओं का कारण बनते है। बाबा की अदस्य संघर्ष चेतना अंत में जाकर टूटती है और वह भी यह देखकर कि जिस परिवार और संबंधों पर उन्हें गर्व था, उसने ही उसके विश्वास के साथ छल किया है। 'आँखें कहानी में निर्धनता और संघर्ष की भूमि पर व्यक्ति की अस्था के टूटने की यात्रा का वृतांत है। 'बाबा ने सुना नहीं। वैसे ही बहके कहके बोले, परभात की अम्मा, मेरे होते हुए मेरे परभात के बच्चे अनाथ हो गए। परभात की माँ इन आँखों से क्या यह भी देखना था...सचमुच, तू अंधी हो गयी-परमात की माँ...अच्छा हुआ। जग बौरा गया। अंधा हो गया है। सामाजिक व्यवस्था में बदती हुई धनलोलुपता से घर परिवार टूटते जा रहे है इसका सजीव चित्र यह कहानी प्रस्तुत करती है। यही स्थिति 'इस बार फिर बर्फ गिरी तो

कहानी में है। कहानी धनलोलुपता के संदर्भ में संबंधों का उद्‌घाटन करती है। बेटे बहु को बूढी माँ की सेवा की याद महीने के अंतिम दिन यानी पेंशन के दिन आती है, दो तीन दिन माँ की सेवा होती है और तुरंत अंधेरी कोठरी ही गती होती है। स्वयं पेंशन की तारीख देवा ही बताता हैं तो वह कहती है-'हाँ बेटे हाँ। मेरी तो मति ही मारी गयी है। अक्ल पर ही पत्थर पड़ गया है। मैं तो भूल ही गयी थी कि तेरे बाबू के नाम की पेंशन भी लानी है। कोशिश करूगी क्यों नहीं जाऊँगी भला।

इसी तरह कथाकार ने परिवारिक संबंधों के धरातल पर व्याप्त क्षुद्रताओं का सूक्ष्म अंकन किया है और पाठकों को सोचने पर विवश किया।

शहरी जीवन की जटिलता से जूझने के लिए महानगरीय परिवार का चित्रण भी जोशी जी ने बारीकी से किया है। अंचल और शहर दोनों ही परिवेशों मानवीय संवेदनाओं के निरंतर अवमूल्यन, भ्रष्टाचार का चित्रण 'नई बात' कहानी में हुआ है। चंद्रवल्लभ उप्रेती की बहन दरजा दस तक पढ़कर घर पर बैठी है। उसके विवाह की बात कही न जमने पर वह शहर बुला लेता है। वह आये दिन से पड़ोसी के लड़के के साथ प्रेम करने लग जाती है, पत्नी को दिन भर नजर रखनी पड़ती थी बदनामी के डर से लड़के को कुछ नहीं कहने गुस्सा करके शांत रह जाते है। शांत रहना ही सारी विडंबनाओं की जड़ है। गाँव में माहील खराब हो गया है। इसलिए गांव से पलायन करते है तो शहर में भी इस विडंबना से मुक्ति नहीं हैं, लेकिन यहाँ से भागकर कहीं और जाने का उपाय नहीं। इसलिए सब चुपचाप सहते जाना समझदारी है। 'स्वभाव' कहानी शहरी परिवार में आकर रहनेवाली एक छोटी लड़की मिन्नी गंवार हाकर शहरी बन जाती है तो मालती द्वेष करने लग जाती है, जितने भी अब मालती से दूर भागने लग जाता है तो मालती टूट जाती है। अपने रेगग्रस्त जीवन को शाप समझने लग जाती है और अपने मन में तरह तरह की बातें बनाने लग जाती है और शंका में ग्रस्त रहती है।

हिमांशु जोशी जी की प्रथम कहानी 'अंधेरे में छोटे परिवार का संघर्ष मय चित्रण मिलता है। कहानी में खिलानंद बाबू रोगग्रस्त है। अपने परिवार को यानी पत्नी तथा दो छोटे बच्चों का जीवन चलाना भी दूभर हो गया है। अपने इलाज के लिए भवाली जाना संभव नहीं होता और अंत में एक दिन इस दुनिया से चला जाता है। उसी प्रकार 'अन्ततः' कहानी में भी माँ और पुत्र का जिक्र एक छोटे परिवार के रूप में होता है। कहानी का बीरजू एक निकम्मा पुत्र है तो बूदी बिनिया उसका सहारा है। घर में कुछ भी नहीं है उबालने के लिए गांव के हर एक का चुल्हा दिन में दो बार

जलता है। परंतु बिनिया के घर भी जलता है। लेकिन चूल्हें पर उबालने के लिए कुछ भी नहीं रहता-'सबके घर में दिन में दो बार चूल्हे जलते हैं पर अभागी बिनियाँ अपनी रीती इंडिया में क्या उबाले उपलों की आँच में क्या सेंकें चूल्हा तो रोज ही जलता, लेकिन अधिकतर केवल धुएँ का गुबार उपडकर रह जाता।' इसी प्रकार छोटे परिवार के आर्थिक संकटों का उनकी समस्याओं का चित्रण मिलता है।

हिमांशु जोशी की कई कहानियों में परिवारिक जीवन में दांपत्य का संघर्ष चित्रित हुआ है। इसमें 'परिणति' ए 'अनचाई', 'नावपर बैठे हुए', 'सिमटा हुआ दुःख', 'किनारे के लोग' आदि कहानियों में प्रमुख रूप मिलता है। इन कहानियों में स्त्री पुरूष के संबंध बनाए रखने की चेष्ठा की गई है।

'परिणति' कहानी की वितस्ता त्यागा की प्रतिमूर्ति है। उसमें भारतीय स्त्री के सभी गुण है। वह पति को परमेश्वर मानकर चलती है त्यागा पर टिका जीवन अपनानेवाली स्त्री है। उसका पति चिरंतन पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है और जुबेदा को अपने साथ रखता है, तो वह खुद जुबेदा की तरह मोहक बनना चाहती है। फिर भी पति जुबेदा को छोड़ नहीं सकता यह जानकर विद्रोह कर बैठती हैं, वह अपने पति को पत्नीत्व का अवसास दिलाने के लिए अपनी सहेली के भाई का फोटो तथा झुठा प्रेम पत्र रखकर शराब पीकर बेहोश होने का नाटक करती है। उसे अपने आप पर शर्म आती है और चिरंतन से माफी माँगती हुई कहती है-'जिस ढंग से आपको सुख मिले, वैसा कीजिए। आपकी खुशी से क्या मेरी खुशी अलग है। आपकी खुशी के लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ...सबकुछ। इन वाक्यों से विवस्ता के त्याग की भावना दिखाई देती है। विवस्ता का आदर्श भारतीय स्त्री का रूप तब मिलता है ज बवह अपने पति से कहती है-'अपने पाँवों के पास थोड़ी सी ठौर दे दीजिए वहाँ पर पड़ी रहकर जिंदगी गुजार दूंगी। कभी उफ तक नहीं करूंगी।'

जोशी जी ने पति पत्नी के टूटे हुए संबंधों को बनाए रखने का अथक प्रयास अनचाहे तथा 'किनारे के लोग' कहानियों में किया है। 'अनचाहे' कहानी 'मैं' के माध्यम से पति पत्नी के संबंध में दरार आने लग जाती है तो 'मैं' स्वयं मकान छोड़कर चला जाता है। इस तरह जोशी जी ने टूटने हुए दाम्पत्य संबंध को बनाए रखने की कोशिश की है।

'बूंदपानी' कहानी के माध्यम से पारिवारिक समस्या का चित्रण मिलता है। वह भी मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण मिलता है। कालिन्दी गृहिण है तो विश्वेश्वर पति है। विश्वेश्वर का भाई दोनों पुत्रों के साथ घर आते ही घर में कलह प्रारंभ हो जाता

है। उनका आना उसे अच्छा नहीं लगता और उन दोनों बच्चों को घर से बाहर निकाल देती है-'विश्वेश्वर मुँह खोले कालिन्दी की ओर देखता रहा, कुछ कहे इससे पहले ही एक एक करके कुत्ते के पिल्ले की तरह बाहर घसीट कर कालिंदी ने दोनों बच्चें को निकालें और सामने खड़े कर दिया।

इस प्रकार पारिवारिक तनाव, तथा मूल्यहीनता का चित्रण कालिन्दी के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है।

मध्यवर्गीय स्त्री : हिमांशु जोशी जी ग्रामीण परिवेश के कहानीकार होने के कारण उनके कहानियों में मध्यवर्ग का चित्रण भी प्रखर रूप में उभरकर आया है। अनेक कहानियों में मध्य वर्ग के चित्रण के साथ-साथ निम्न मध्यवर्ग का चित्रण भी अवश्य, मिलता है। 'न जानना', 'बरस बीत गया', 'किसी एक शहर में', 'बूंद पानी', 'नई बात', 'सीमा से कुछ और आगे' आदि कहानियों में मध्यवर्ग का प्रभावी चित्रण मिलता है। निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विपन्नता और असहायता ने उनके दर्द को छुआ है, जिसकी प्रभावान्विति इन कहानियों में देखने को मिलती है।

'किसी एक शहर में कहानी में हिमांशु जी ने मध्यवर्ग का चित्रण बारीकी से किया है। किसी एक प्राईवेट कंपनी में काम करनेवाली महिला के माध्यम से मध्यम वर्ग का चित्रण किया है। उसे महीने के नब्बे मिलते हैं और उसका गुजारा चलना मुस्किल हो जाता है-'थोड़ी देर बाद वह सन्नाटा तोड़ती है। लम्बी साँस भरती है- सूझता नहीं राशनवाले का बिल इस महीनें कैसे चुकाएँगें। चीजें इतनी महँगी हो गई है कि जीना मुश्किल हो रहा है। यहाँ आंकर ऐसा होगा, सम, हमने सोचा तक न था।

जोशी जी ने मध्यमवर्गीय जनता का चित्रण उनकी तकलीपें, उनके संघर्ष, आदि का चित्रण बारीकी से अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। 'नई बात', 'सजा', 'चील', 'भेड़िए', 'सीमा से कुछ और आगे' कहानियों में भी मध्यमवर्गीय परिवार का चित्रण मिलता है। जोशी जी ने मध्यवर्गीय परिवार के आत्मसंघर्ष को वाण देने का प्रयास किया है।

निम्नवर्गीय स्त्री : मनुष्य चिन्ह कहानी में भी निम्न वर्ग का चित्रण मिलता है। गोविन्दी बाल विधवा है वह अपने फूटे करम के रो रही उस पर किरपाल के साथ बातें की इसके आधार पर गाँव में अनैतिक संबंध की सृष्टि करके उस पर लांछन लगने दिया जाता है। गोविन्दी को देखते ही निम्न वर्ग का चित्रण सामने आ जाता हैं-'गोविन्दी गठरी की तरह बैठी, फटी पिचौड़ी ओढ़ सिर झुकाये, अपने

काने करम को रो रही है। उसका बूढ़ा अन्धा बाप, टूटी छप्पर के अंधेरे कोने में बैठा, चिलम का सूखा धुंआ उगल रहा है। लोग उसके मुँह पर निधरक थूक रहे हैं।' इस प्रकार निम्न वर्ग का यथार्थ अंकन हुआ हैं। गोविन्दी निम्न वर्गीय स्त्री होने के कारण कोई भी उसकी रक्षा करने आगे नही आता, वह निरंतर अधिकारियों के हाथों शोषित होती रही।

'तरपन' कहानी की मधुलि निम्नवर्ग का एक सजीव रही है। 'तरपन' कहानी की मधुलि आर्थिक अभाव के कारण अपने पति का पिण्डदान कुश तेल देकर नहीं कर पातीं। पति के पिण्डदान के लिए घर घर घूमती है। हर एक से मदद् मांगती है, अंत में हारकर अपने पति का 'तरपन' बिना ब्राह्मणों के स्वयं अपने पुत्रों के साथ माटी का पात्र बनाकर गोदान कर देती है-'अपनी नन्हीं नन्हीं अंजुलि में पानी भरे तीन अनाथ, अबोध नंगे बच्चे खड़े थे। सूखे तिनके की तरह जाड़े में काँपते हुए आँखें मीचे डूबे सूरज को जलधार चढ़ा रहे थे। तरपन कर रहे थे। माटी का पिंडदान दे रहे थे। माटी की गऊ की पूँछ थामे गोदान कर रहे थे।

जोशी जी ने निम्नवर्ग का बहुत करीब से देखने का प्रयास किया है, इसीलिए उच्च, मध्यमवर्ग से भी निम्नवर्ग का चित्रण करने के लिए एक शिल्पी की भांति लेखनी चलायी है। इसीलिए इनकी कहानियों का मूल केंद्र गाँव रहा है। वे शहरी वातावरण में रहते हुए भी गाँव में व्याप्त मध्य एवं निम्न वर्ग के सच्चे साक्षी रहे है। इसके आधार पर हम डॉ. विवेकीराय के मत को उद्घाटित करते हैं-'हिमांशु जोशी पीड़ा के कथाकार है। यह पीड़ा गाँव में है। प्रतिबद्ध राजनीति, सोद्देश्यता से रहित सामान्य जन की पीड़ा के चित्रण की प्रवृति जोशी जी का भीड़ से पृथक कर देती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कथाकार हिमांशु जोशी ने स्त्री पात्रों का चित्रण करते समय कुण्ठाहीन और कुली दृष्टि का प्रयोग किया है। यही कारण है कि वे अत्यंत प्रामाणिक रूप में भारतीय स्त्री की यातना का चित्रण करने में सफल हुए है। शिक्षित और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री अबला नहीं रहती बल्कि अपना और परिवार का पुरूष की भाँति भरण पोषण करते हुए स्वयं को सबला प्रमाणित करती है। इतना ही नहीं स्त्री के आत्मनिर्णय तथा सार्वजनिक जीवन में सार्थक हस्तक्षेम को भी(भले ही कम मात्रा में) लेखक ने अपनी रचनाओं में उभारा है।

सदंर्भ ग्रंथ :

1. हिमांशु जोशी, गंधर्व गाधा, किताब घर, नई दिल्ली-110002

2. हिमांशु जोशी, छाया मत छूना मन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. ऋषभदेव शर्मा, स्त्री सशक्तीकरण के विविध आयाम, गीता प्रकाशन, हैदरावाद
4. सुषमा धवन, हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

- डॉ. अरूणा,
विभाग अध्यक्ष,
एल.वी.डी. महाविद्यालय,
रायचूर

डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर

जन्म : 18. 04 1978

जन्म स्थान : गदग(कर्नाटक)

अध्ययन : एम.ई.एस. आर्ट्स एंड साईन्स कालेज सिरसि(उत्तर कन्नड) कर्नाटक

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी. (हिन्दी)

पद : सहायक प्राध्यापिका, विभागाध्यक्षा हिन्दी विभाग
सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय सिरसी (उत्तर कन्नड) कर्नाटक

प्रकाशित : 1. आंचलिक उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना, 2. तुलसीदासर सरल दोहेगलु (कन्नड), 3. बिहारीरवर सरल दोहेगलु (कन्नड), 4. नन्नवरु कन्नड कविता संग्रह, 5. संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता(उप-संपादक)
राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सेमिनार में शोधालेख प्रस्तुति : 50

पुरस्कार : 1. अम्रुता प्रीतम एवार्ड, 2. महादेवी वर्मा पुरस्कार, 3. साहित्य शिकर सममान अवार्ड, 4. साहित्य शिरोमणी राष्ट्रीय अवर्ड, 5. नेहरु एजुचतिओनल नेशनल अवार्ड

संपर्क : 'गर्जेंद्र निलय' 1 क्रास अंबागिरि, गांधी नगर सिर्सि, जिला-उत्तर कन्नड, कर्नाटक

मोबाईल : 9242067213

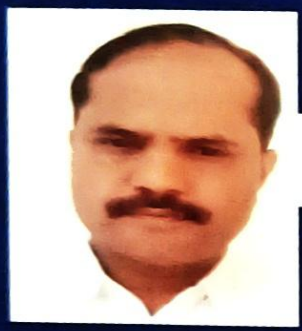

डॉ. महांतेश आर अंची

जन्म : 14. 03 1978, जन्म स्थान-हावेरी(कर्नाटक)

शिक्षा : एम. ए., पीएच. डी., बी. एड., पी. जी. डी. टी.

प्रकाशन : बेलगांव विभागीय हिन्दी सेवा शिक्षण समिति-हुबली, पत्रिका के संपादक, संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता(उप-संपादक), राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सेमिनार में शोधलेख प्रस्तुति-70

पुरस्कार : डॉ. रामकुमार वर्मा जी के पुरस्कार, भारत गौरव शिखर सम्मान, शरतचन्द्र चटर्जी के राष्ट्रीय पुरस्कार

पद : सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
प्रियदर्शनी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय रट्टीहल्ली, जिला-हावेरी

मोबाईल : 9481523327

अधिकरण प्रकाशन

नयी रचना नये विचार

ISBN : 978-93-89194-64-7